JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान समाज में संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता : सारगर्भित विश्लेषण

प्रियांशु
शोधार्थी,
संस्कृत विभाग, फ़िरोज़ गाँधी कालेज, रायबरेली,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, भारत

शोध सार-

संस्कृत और शिक्षा दो ऐसे भारतीय समाज के पहलू है जिन्हें अलग नहीं किया जा सकता क्योकिं संस्कृति अपने अन्दर भाव और भाषा का अनूंठा संयोजन है, वह भाषा जो संस्कृति की उत्पत्ति मे उपादान रही हो उसकी तो उस संस्कृति के साथ समवाय संबन्ध की व्याप्ति बन जाती है। वर्तमान समय में भारत की सनातन संस्कृति और उससे उत्प्रेरित शिक्षा प्रणाली की दिशा और दशा को समझने के पश्चात यह विचारणीय हो जाता है कि वर्तमान समाज में संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता प्रदर्शन हेतु संस्कृत के अलग-अलग पक्षों का सारगर्भित विश्लेषण समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाय जो पाठक के मन मे जिज्ञासा का बीज बोये और उसे संस्कृत के महत्व की सारगर्भित जानकारी प्रदान करते हुये संस्कृत अध्ययन के प्रति उत्प्रेरित करे।

बीज शब्द *– शिक्षा प्रणाली, संस्कृत, संस्कृति और शिक्षा, बौद्धिक संपदा, भाषाई दक्षता, स्वास्थ्य कुशलता, बौद्धिक संपदा, सामुदायिक प्रबलता, राजनीतिक कुशलता, रचनात्मकता।*

प्रस्तावना-

समाज सामाजिक संबंधों का जाल है। समाज की यह परिभाषा जिन सामाजिक संबंधों की व्याख्या करती, वे संबंध व्यक्ति से व्यक्ति को अमूर्त बंधन की डोरी में बांधते हैं, ये बंधन वैचारिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, भाषायिक, विविधता के होते हुए भी भावनात्मक सहभागिता की एकता स्थापित करते हैं। यह भावनात्मक सहभागिता ही सामुदायिक भावना को जन्म देती है जिसे समाज की सर्वोत्कृष्ट विशेषता के रूप में जाना जाता है, एक स्वस्थ्य सामुदायिक भावना समाज मे कुशल नेतृत्व की क्षमता को विकसित करती है जिससे विकसित प्रगतिशील समाज की संकल्पना का विकास होता है किन्तु ध्यातव्य है कि व्यक्ति में सामुदायिक भावना के विकास के लिये उसका

संस्कारवान होना आवश्यक है ये संस्कार व्यक्ति के भावनात्मक तथा संज्ञानात्मक विकास के फलस्वरूप उत्पन्न होते हैं।

यह सर्वविदित है कि संस्कृत भाषा का शिक्षण व्यक्ति के भावनात्मक तथा संज्ञानात्मक विकास के मध्य सकारात्मक सह सम्बन्ध की स्थापना करता हुआ संतुलन प्रदान करता है। वर्तमान समाज मे जहाँ सूचना प्राप्ति के विविध संसाधन हैं के मध्य वास्तविक सूचना का ज्ञान होना अतिआवश्यक है, संस्कृत भाषा का शिक्षण व्यक्ति को मूल ज्ञान की सूचना देकर सन्तुलित विकास की अवधारणा को जन्म देता है। अंग्रेजों ने स्वार्थ सिद्धि के लिये संस्कृत के स्थान पर अंग्रेजी भाषा को बढ़ावा दिया किन्तु वर्तमान समाज में व्यक्तियों की अवधारणा बदल रही है इस बदलती अवधारणा के साथ संस्कृत की शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास एवं विकसित भारत के सपने को साकार करने की योग्यता रखती है तथा पुनः विश्वगुरु के पद को प्रतिष्ठित करने की पेशकस करती है।

सारगर्भित सामाजिक विकास व्यक्ति के भावनात्मक तथा संज्ञानात्मक विकास का संयुक्त परिणाम है। इसमें शिक्षा का प्रमुख योगदान है किंतु शिक्षा कैसी हो ? जो भावनात्मक पक्ष को गौण कर केवल संज्ञानात्मक पक्ष को प्रमुखता देती हो या दोनो के मध्य संबंध स्थापित करती हुई विकास की नई प्ररोचनाओ को जन्म देती हो। यह सर्वविदित है कि संस्कृत भाषा का शिक्षण व्यक्ति के भावनात्मक तथा संज्ञानात्मक विकास के मध्य संतुलन स्थापित करता है जिससे व्यक्ति की वैचारिक द्वंदता समाप्त होती है और वह अपनी बौद्धिक संपदा का कुशलता से प्रयोग कर पाता है यही कारण है कि प्राचीन काल से अर्वाचीन काल तक शिक्षा की एक लंबी विकासधारा हमारे मध्य परंपरा के रूप में विद्यमान है। प्राचीन समय में श्रवण, मनन, और निधिध्यासन से प्रारंभ हुई शिक्षा प्रणाली आज प्रद्योगिकी के माध्यम से नित नए आयाम स्थापित कर रही है।

वर्तमान समाज की दिशा और दशा-

वर्तमान समाज की दशा अव्यवस्थित है, समाज के प्रत्येक स्तर पर पर्याप्त अन्तर्विरोध है, क्या पाप और क्या पुण्य है? क्या नैतिक और क्या अनैतिक है ? क्या ग्राह्य और क्या त्याज्य है ? क्या सत्य और क्या असत्य है? इन अवधारणाओं मे पर्याप्त विरोधाभास है इसी का दुष्परिणाम है कि आज समाज में अपराध, भ्रष्टाचार, और आतंकवाद, बेरोजगारी जैसी कुरीतियां अपने पैर पसार रही हैं ये समस्याएं समाज के संतुलित विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही हैं साथ ही पीढ़ियों के मध्य वैचारिक मतभेद को जन्म देकर रिश्तों की डोरी की गरिमा को खण्डित कर रही हैं।

ध्यातव्य है कि समाज की वर्तमान दिशा अन्ध प्रौद्योगिकी के विकास की अप्रत्याशित कहानी को लिख रही है और हम सब इसके साक्षी व कर्ता हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A.I.), Chait GPT जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियां समाज को दिशा देने का कार्य कर रही है किन्तु समाज की दिशा क्या होगी? इस पर अभी प्रश्नचिन्ह लगा है।

वर्तमान समाज और संस्कृत शिक्षा के मध्य अंतःसंबंध –

शिक्षा समाज का एक अनिवार्य पहलू है शिक्षा के अभाव में सुसंस्कृत समाज की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। समाज अपने स्वीकार्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षा का सहारा लेता है। वर्तमान मे परिवर्तित हो रहे समाज की धारणा के अनुरूप शिक्षा की अनिवार्यता को प्रकल्पित करना आज की आवश्यकता है किन्तु समाज में व्याप्त दोषों के परिमार्जन हेतु शिक्षा प्रणाली का विकास करना अनिवार्यता। अतः शिक्षा समाज की उन्नति का वह समुच्चय है जो इसे गतिशील बनाते हुये इसकी दिशा व दशा का निर्धारण करती है। वर्तमान समाज और संस्कृत शिक्षा के मध्य यदि अंतः संबंध की बात की जाय तो यह एक अमूर्त अवधारणा है इसका विकास समाज में केवल संस्कृत भाषा के सारगर्भित ज्ञान से ही होता है जन-जन में व्याप्त विकास की इस अवधारणा को संस्कृति के नाम से जाना जाता है जिसने समाज को सर्वप्रथम आच्छादित किया-

"सा संस्कृति प्रथमा विश्ववरा "।

भारतीय संदर्भ में संस्कृति की आत्मा संस्कृत मात्र ही है। इसकी प्रतिष्ठा का प्रमाण हमें इस उक्ति से मिलता है-

"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतसंस्कृतिस्तथा।"

यह निर्विवाद सत्य है कि भारत की शाश्वत सांस्कृतिक अवधारणा संस्कृत के बिना सम्भव नही है।

रक्षितुं न च शक्यन्ते बिना संस्कृतशिक्षणम्

सभ्यतासंस्कृतिर्लोके भारतस्य च शेवधिः ॥ (९/८४- भारतमाताब्रूते)

वर्तमान विद्वान डॉ हरिनारायण दीक्षित महोदय का कथन स्पष्ट रूप से इसकी पुष्टि करता है कि संस्कृत शिक्षा के अभाव में भारतीय सभ्यता, भारतीय संस्कृति एवं भारतीय धरोहर की रक्षा नहीं की जा सकती है।

वर्तमान समाज की प्रोन्नति में संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता –

समाज के निर्माण में संस्कृत भाषा की महत्ता आदिकाल से रही है जब से संस्कृत भाषा के लिखित साक्ष्य मिलते है तब से वर्तमान कल तक संस्कृत की भावना प्रत्येक व्यक्ति में किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है। इसकी अक्षुण्ण विद्यमानता भारतवर्ष पर आने वाली धार्मिक, सांस्कृतिक आघातों के प्रति ढाल का कार्य करती रही है।

अब वर्तमान समाज एक नये आयाम की ओर उन्मुख है अतः अब समाज के सम्मुख नई चुनौतियां एवं नये उद्देश्य हैं वस्तुतः उद्देश्यों में नयापन भौतिकतावाद के कारण है, मनुष्य के अस्तित्व को यथावत रखने के लिये उद्देश्यों की भावनात्मक प्रकृति आज भी वैसी ही है जैसी नैसर्गिक रूप से होनी चाहिये।

१. प्रौद्योगिकी के दृष्टिकोण से संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता -

वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी, विकास की उत्प्रेरक धारा के रूप मे एक नया आयाम स्थापित कर रही है जिससे दिन प्रतिदिन कोई न कोई तकनीकि समाज का समायोजन एक नये प्रयोजन के रूप में समायोजित कर रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी आधुनिक तकनीकियाँ समाज की दशा को दिशा प्रदान करने का कार्य कर रही हैं ऐसी तकनीकि का अन्ध प्रयोग भविष्य में मानवीय सभ्यता के लिये चुनौतिपूर्ण हो सकता है[१]। यदि समय रहते इसकी प्रकल्पित अवधारणा की पराकाष्ठा का निश्चयन सम्यक प्रज्ञा से न किया गया तो इसका सर्वाधिक नकारात्मक प्रभाव व्यक्ति रचनात्मकता पर एवं यान्त्रिक दासता के रूप में दिख सकता है। रचनात्मकता की इस कमी को पूर्ण करने एवं इस तकनीकी को और अधिक मददगार सिद्ध करने में संस्कृत शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान सुनिश्चित कर सकती है।

२.वैश्वीकरण के दृष्टिकोण से संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता -

वर्तमान दौर वैश्वीकरण का है जहाँ आज देश की व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था का आधार वैश्विक बाजार तक पहुँच एवं वैश्विक व्यापार में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना है के कारण एक देश का दूसरे देश के साथ भावनात्मक सम्बन्धों का सुदृढ करना एक आवश्यकता बन गई है अतः ऐसे में वसुधैव कुटुम्बकं की भावना का सारगर्भित ज्ञान होना वैश्वीकरण का महत्वपूर्ण अंग बन गया है इस आवश्यकता की पूर्ति का सर्वाधिक सुगम्य साधन संस्कृत भाषा का शिक्षण है।

३.भाषाई दक्षता के दृष्टिकोण से संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता –

भाषा सामाजिक सम्प्रेषण का माध्यम है जो न केवल मौखिक अपितु सांकेतिक एवं लिखित रूप से भी व्यक्ति की भावनाओं की अर्थपूर्ण संयोजना प्रस्तुत करती है। भारोपीय भाषाओं मे अग्रणी एवं आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीन श्रेष्ठतम भाषाओं मे प्रधान और वैज्ञानिक है, संस्कृत भाषा की इसी दक्षता को देखते हुये १७८६ ई० में सर विलियम जोन्स ने लैटिन और ग्रीक के साथ समानता के आधार पर इनके तुलनात्मक अध्ययन पर बल दिया।[२] इस भाषा का बृहत्तम शब्दकोश न केवल संस्कृत भाषा की परिपूर्णता को प्रदर्शित करता है अपितु पाणिनीय व्याकरण से परिमार्जित एवं परिष्कृत पद प्रतिष्ठा हिन्दी जैसी अन्योन्य भाषाओं को आधार प्रदान कर उन्हें समृद्ध बनाती है। इस प्रकार संस्कृत भाषा का शिक्षण समाज को भाषागत दक्षता प्रदान कर भाषा विकास की दिशा व दशा का निर्धारण करता है।

४. स्वास्थ्य और चिकित्सीय दृष्टिकोण से संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता –

संस्कृत भाषा का मानव जाति के स्वस्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, संस्कृत की योग, धारणा, ध्यान जैसी युक्तियां न केवल व्यक्ति को जीवन जीने की कला सिखाती है अपितु व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को प्रमुखता देते हुये मानसिक शान्ति एवं सन्तुलन प्रदान करती है जो मानव स्वस्थ्य के लिये एक सकारात्मक पहलू का कार्य करता है। आयुर्वेद संस्कृत भाषा का अभिन्न अंग है। प्राचीन चिकित्सा पद्धति के आधारभूत ग्रन्थ चरक की चरक संहिता, सुश्रुत की सुश्रुत संहिता, वाग्भट्ट का अष्टांगहृदयम् आदि का ज्ञान संस्कृत भाषा के प्रारम्भिक शिक्षण के बिना प्राप्त

नहीं किया जा सकता, २०१७ में आयुर्वेद के अनुसन्धान क्षेत्र की आयु पत्रिका में प्रकाशित हुये अध्ययन का निष्कर्ष इसकी वैज्ञानिक पुष्टि करता है।[३]

५.सामुदायिक प्रबलता के लिये संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता-

वर्तमान समाज एकाकी समाज की ओर उन्मुख है प्रायः देखा जा है कि आज कल मानवीय सम्बन्धों मे वह मधुरता नहीं रह गयी है जो एक व्यक्ति को दुसरे से भावनात्मक समायोजन प्रदान कर उनमे रिश्तों की गरिमा का मण्डन करते हुये सामुदायिक भावना को सशक्त कर सके, आज व्यक्ति की धारणा बदल रही उनमे सामुदायिक भावना की शिथिलता के कारण भावनात्मक स्थिरता की कमी महसूस की जा रही है जिसके पारिणाम स्वरूप चिन्ता, तनाव, आत्महत्या जैसी मनोवृत्तियां अप्रत्याशित रूप से अपने पैर पसार रही है इसका मूल कारण व्यक्ति की बदलती अवधारणा एवं जीवन शैली है आज आचार व विचार की पद्धतियां बदल गयी व्यक्ति का एकाकीपन उचित शैक्षिक और सामाजिक मार्गदर्शन के अभाव में व्यक्ति का घातक शत्रु बनता जा रहा है अतः संस्कृत भाषा की शिक्षा न केवल व्यक्ति के सामाजीकरण की प्रक्रिया को सम्यक रूप पोषित करती है अपितु एकाकीपन को सामुदायिक भावना मे परिवर्तित करने की आपार क्षमता का निर्माण करती हुयी चिन्ता एवं तनाव जैसी कुमनोंवृत्तियों का ध्यान, योग जैसी उपचारात्मक पद्धतियों से उपचारित करती है।

६. बौद्धिक संपदा के दृष्टिकोण से संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता-

संस्कृत भाषा न केवल धार्मिक, साहित्यिक एवम सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अपितु बौद्धिक संपदा के दृष्टिकोण से यह गूढतम तत्वों की खान है जिसमें मानवीय सतत विकास की असंख्य युक्तियां निहित है। वेदों में व्याप्त मानवीय उत्कर्ष की सारगर्भित अवधारणाएं जीवन को जीने के माइनों को आईना दिखाने की योग्यता रखती हैं जो न केवल जीवन जीने की कला अपितु ज्ञान विज्ञान के नये द्वार खोलती हैं। बौद्धिकता के आदि प्रमाण चिन्तन परम्परा के आधार भारतीय षड दर्शन हैं। न्याय, वैशेषिक, साख्य, वेदान्त आदि की प्रमाण मीमांसा अनुपम बौद्धिक संपदा की जननी है जो तत्वो का संशय रहित ज्ञान कराकर समाज में व्याप्त रुढिवादी विचारधाराओं का खण्डन करके प्रगतिशील समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभाती है, योग मन को अनुशासित करता है और एकाग्रता की शक्ति में सुधार करता है जो बौद्धिक कार्यों मे लगे व्यक्तियों के लिये आदर्श अनुकूलन प्रदान करता है।

७. राजनीतिक कुशलता के दृष्टिकोण से संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता-

वर्तमान समाज अन्ताराष्ट्रिय स्तर पर राजनितिक उथल- पुथल का शिकार हो रहा है, आन्तरिक अशांति राजनितिक अस्थिरता जैसी विध्वंसक भावनाएं जन्म ले रही है, नेता भ्रष्ट और प्रजा त्रस्त है। वस्तुतः इसका वास्तविक कारण क्या है? अकुशल राजनितिक अवधारणा एवं प्रजा में असन्तोष की भावना। संस्कृत शिक्षा व्यक्ति के अन्दर राजनितिक गुणों का विकास करती है कौटिल्य अर्थशास्त्र, याज्ञवल्क्य स्मृति, मनुस्मृति जैसे नीतिशास्त्रीय ग्रन्थ व्यक्ति को राज पद्धति का ज्ञान कराते हुये प्रजा को आदर्श नागरिक बनने की शिक्षा देते हैं जिसमे उनमे कुशल नेतृत्व

क्षमता का विकास होता है ध्यातव्य है पूर्व शिक्षामंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने संस्कृत के महत्व को देखते हुये राजनितिक ज्ञान विज्ञान की जननी कहा है।[४]

८. रचनात्मकता के दृष्टिकोण से संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता-

रचनात्मकता मानव जाति की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है, अन्य जीवधारियों की अपेक्षा मानव को सृजनशीलता का जो अलौकिक गुण उपहार स्वरूप मिला है वह मानव जाति की आदि से अन्त तक की विकास यात्रा का एकमात्र हेतु है । वात्स्यायन ने अपने ग्रन्थ कामसूत्र मे ६४ कलाओं का उल्लेख किया है जो व्यक्ति की उत्तम रचना शक्ति का जीवन्त प्रमाण प्रस्तुत करती है, खेद का विषय है की वर्तमान मे इनकी संख्या मात्र ८ रह गयी है इन कलाओं के समुचित विकास एवं संरक्षण के लिये तथा समय की मांग के अनुसार इसके उचित परिवर्तन हेतु संस्कृत शिक्षा महती उपयोगिता है।

निष्कर्ष –

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समाज में संस्कृत भाषा का शिक्षण एक अनिवार्य आवश्कता है क्योकिं संस्कृत शिक्षा न केवल आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही अपितु प्रद्योगिकी और वैश्वीकरण के इस दौर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A.I.) और कृत्रिम भाषा (Artificial language) के विकास में वैज्ञानिकों के मध्य अपनी उपयोगिता का प्रमाण दे रही है नासा में शोधरत संस्कृत की सैकड़ों पांडुलिपियां तथा नासा के वैज्ञानिकों की संस्कृत अधयन में रुचि इसकी उपयोगिता के ज्वलंत उदाहरण हैं[५], इसके अलावा भाषाई दक्षता, स्वास्थ्य कुशलता, बौद्धिक संपदा, सामुदायिक प्रबलता, राजनीतिक कुशलता, रचनात्मकता आदि के द्वारा प्रगतिशील समाज की रचना करने वाली संस्कृत भाषा वर्तमान समाज में व्याप्त हो रहे रिश्तों के मध्य कटुता तथा पीढ़ीगत वैचारिक संघर्ष की द्वंदता को समाप्त करने में समर्थ है यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में संस्कृत भाषा का विशिष्टतम स्थान है।[६]

सन्दर्भ ग्रथ सूची

१.*https://economictimes.indiatimes.com/tech/technology/elon-musk-on-ai-one-of-humanitys-biggest-threats/videoshow/104909843.cms?from=mdr;*

Visited :15/06/2024

२. *the Sanskrit language, whatever may be its antiquity, is of a wonderful structure; more perfect than the Greek, more copious than the latin, and more exquisitely refined than either, yet bearing to both of them a stronger affinity, both in root of the verbs and in the forms of grammar, than could have been produced by accident: so strong that no philologer could examine the Sanskrit, Greek and latin without believing them to have sprung from some common source, which, perhaps, no longer exists. There is a similar reason, though not quite so forcible, for supposing that both the gothic and the celtic had the same origin with the Sanskrit.*

- Quoted by R.H. robins : A short history of linguistics, p. 134

३. *Students who have studied Sanskrit at school level find it easier to get good marks in BAMS examination, and particularly Sanskrit subject. Due to less weightage of Sanskrit subject.*

Ayu.* 2017 Jan-Jun; 38(1-2): 57–61.doi: *10.4103/ayu.AYU_53_16

४.*https://www.jansatta.com/politics/sanskrit-oldest-language-of-world-basic-foundation-of-indias-culture-called-the-soul-of-india/1351607/*

Visited :16/06/2024

५. *दैनिक भास्कर, नासा के वैज्ञानिक भी संस्कृत भाषा का अध्ययन कर रहे;२०१८;*

https://www.bhaskar.com/rajasthan/bhilwara/news/nasa-scientists-are-also-studying-sanskrit-language-for-15-days-kumawat-063040-3560110.html

Visited :03/06/2024

६.*https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf*

७. *Shree Nahata : the importance of Sanskrit in Indian education system;17june2021; https://educationsouthasia.web.ox.ac.uk/thinkpiece16;*

visited : 04/07/2024

८. दीक्षित हरिनारायण, भारतमाताब्रूते, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, जवाहरनगर दिल्ली, २००३

९. द्विवेदी कपिलदेव, भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी १८ संस्करण: २०२३ ई०